जामिया मिल्लिया इस्लामिया
जनसंपर्क एवं मीडिया समन्वयक कार्यालय

प्रेस विज्ञप्ति 07 जुलाई 2020

जामिया के पूर्व छात्र ने कोविड-19 वायरस का पता लगाने के लिए एक नयी पद्धति विकसित की

कोविड-19 महामारी के लिए अभी कोई सटीक ईलाज या टीका उपलब्ध नहीं होने तक, इस रोग को काबू पाने का केन्द्रीय बिन्दु यह है कि सार्स कोव-2 संक्रमित रोगियों की प्रारंभिक पहचान कर ली जाए। जामिया मिल्लिया इस्लामिया के पूर्व छात्रं डॉ अमित दत्त और मुंबई के टाटा मेमोरियल सेंटर में शोधकर्ताओं की उनकी टीम ने , किसी व्यक्ति में कोरोना वायरस के संक्रमण होने का समय रहते पता लगा लेने के लिए, रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी-आधारित रैपिड स्क्रीनिंग पद्धति विकसित की है। इसके ज़रिए बिना किसी खास लागत के, व्यक्तियों की लार से इस बात का तुरंत पता लगाया जा सकता है कि उसमें आरएनए वायरस तो नहीं हैं। यह पद्धति, एयरपोर्ट और रेलवे स्टेशनों आदि पर आने जाने वाले व्यक्तियों का परीक्षण करके, इस घातक रोग को फैलने से रोकने में काफी कारगर साबित होगी।

इस परीक्षण से इस बात की फौरन पहचान हो जाएगी कि किसी व्यक्ति में आरएनए वायरस का संक्रमण तो नहीं है और ऐसा होने पर उसे तुरंत कोविड-19 महामारी के विशेष उपचार केन्द्र में ले जाकर कोविड-19 संबंधी टेस्ट हो जाएंगे और रोग को संक्रमण को बढ़ने से प्रभावी ढंग से रोका जा सकेगा।

इस रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी आधारित परीक्षण में, कुछ ही मिनटों में, आरएनए वायरल पॉजिटिव नमूनों का पता लगाने की 91.6 (92.5 और 88.8 प्रतिशत विशिष्टता) की सटीक क्षमता है। इस शोध के निष्कर्षों के विवरणों का वर्णन करने वाली रिसर्च को विश्व की जाने-माने जर्नल ऑफ बायोपोटोनिक्स में प्रकाशित किया गया है और समूह द्वारा विकसित कम्प्यूटेशनल टूल आरवीडी को केवल 2 दिनों में दुनिया भर में 10 से अधिक समूहों द्वारा डाउनलोड किया गया है।

जामिया की कुलपति प्रो नजमा अख्तर ने कोविड वायरस का पता लगाने में, इस अहम पद्धति को विकसित करने के लिए डॉ अमित और उनकी टीम को बधाई दी। उन्होंने कहा, “हमारे छात्रों और पूर्व छात्रों को स्थानीय, राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी जारी

रखनी चाहिए और हमारे समय के सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर फौरी पहल के लिए नेतृत्व और समर्थन दोनों प्रदान करना चाहिए।"

कोरोना वायरस के चलते देश में जारी कड़े लाॅकाडउन की परिस्थितियों में भी डॉ अमित दत्त और उनकी टीम ने, बहुत कम संसाधनों से दिन-रात मेहनत करके इस महामारी पर रोक लगाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान किया है।

डा. अमित दत्त टाटा मेमोरियल एडवांस्ड सेंटर फॉर ट्रीटमेंट, रिसर्च एंड एजुकेशन इन कैंसर के प्रमुख अन्वेषक हैं। कैंसर आनुवंशिकी में उन्हें, उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए जाना जाता है। भारत के लोगों में फेफड़ों के कैंसर रोगियों में उनका शोध बहुत महत्वपूर्ण है।

वह एक वेलकम ट्रस्ट / डीबीटी इंडिया एलायंस इंटरमीडिएट फेलो है। उन्होंने 1997 में जामिया से बायोसाइंसेज में एमएससी किया, उसके बाद डॉ वंगा शिवा रेड्डी, आईसीजीईबी और डॉ आरिफ अली, जामिया की म मेंटरशिप के तहत 2000 में प्लांट जेनेटिक्स में डॉक्टरेट की पढ़ाई की। डॉ दत्त ने ज्यूरिख विश्वविद्यालय, स्विट्जरलैंड से अपना दूसरा पीएचडी किया और उसके बाद में कैंसर जीनोमिक्स में अपने पोस्टडॉक्टरल शोध को पूरा करने के लिए हार्वर्ड और एमआईटी, यूएसए के ब्रॉड इंस्टीट्यूट गए। 2011 में टाटा मेमोरियल सेंटर, मुंबई में चीफ रिसर्चर के तौर पर भारत वापस आ गए।

हाल ही में, वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए भारत सरकार की शीर्ष एजेंसी, वैज्ञानिक अनुसंधान और औद्योगिक अनुसंधान परिषद ने, दत्त प्रयोगशाला द्वारा किए गए योगदान को मान्यता देते हुए, उन्हें विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए 'शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार' से सम्मानित किया । चिकित्सा विज्ञान में इसे सर्वोच्च भारतीय विज्ञान पुरस्कारों में गिना जाता है।

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया समन्वयक